



## जनजातियों के क्षेत्रों पर बाहरी प्रवेश के प्रभाव

डॉ. राहुल भारती

सहायक प्राध्यापक, शासकीय महाविद्यालय जुन्नारदेव, जिला-छिंदवाड़ा म.प्र.

DOI : <https://doi.org/10.5281/zenodo.19543293>

### ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-03-2026

Published: 10-04-2026

Keywords:

जनजाति, अतिक्रमण, क्षेत्र,  
भौगोलिक स्थिति, आरक्षण

### ABSTRACT

जनजाति क्षेत्रों में जनजाति के लिए विशेष क्षेत्र का होना अति आवश्यक है। भारतीय संविधान में जनजातियों को भौगोलिक आधार पर आरक्षण प्रदान किया गया है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर इसलिए दिया गया कि जनजाति अपनी वास्तविक स्थिति को जस की तस बनाये रख सकें। किंतु वर्तमान में हम देखते हैं कि जनजातियों के क्षेत्रों में विभिन्न कई तरीकों से अतिक्रमण किया जा रहा है। चाहे वह खनन, बांध, राष्ट्रीय पार्क, विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट से उनको अपनी जमीन से बेदखल किया जाता है। जिससे उनकी पहचान का संकट ही खड़ा हो गया है।

### परिचय

जनजाति का अर्थ वह समूह जो एक विशेष क्षेत्र में निवास करता है और उसकी एक विशेष संस्कृति पहनावा बोली हैं उस समूह को हम जनजाति या वनवासी कहते हैं। अनुसूचित जनजाति वे समूह है जो अपनी विशिष्ट क्षेत्र में नाबा बोली संस्कृति आँधी से समृद्ध है और वह है भारतीय संविधान में अनुच्छेद टीम 342 के तहत सूचीबद्ध हैं ऐसी जनजाति को हम अनुसूचित जनजाति कहेंगे क्योंकि ये भारतीय संविधान में सूचीबद्ध हो चुकी हैं यह अनुसूचित हो चुकी है इस कारण उसे अनुसूचित जनजाति कहा गया है।

### डी एन मजुमदार के अनुसार

“जनजाति ऐसे परिवारों या परिवार समूहों का एक समुदाय है, जो एक सामान्य नाम धारण करते हैं, एक निश्चित क्षेत्र में रहते हैं, समान भाषा बोलते हैं तथा सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में एकरूपता रखते हैं।”

### गिलीन और गिलीन के अनुसार

“जनजाति एक स्थानीय समूह है जो एक सामान्य क्षेत्र में निवास करता है, एक सामान्य भाषा का उपयोग करता है और एक सामान्य संस्कृति का पालन करता है।”



उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि जन जाति एक ऐसा समूह है जो एक विशिष्ट क्षेत्रों में निवास करता है और उसकी एक अलग बोली, संस्कृति, पहनावा, खान पान एवं रहन सहन हैं ऐसे समूह को हम जनजाति कहते हैं। अनुसूचित जनजातियाँ वे जनजातीय समुदाय हैं जिन्हें अनुच्छेद 342 के अंतर्गत राष्ट्रपति द्वारा अधिसूचित किया जाता है।

**कुल जनसंख्या (ST Population)** भारत में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या: **10.45 करोड़ (104.5 मिलियन)** यह देश की कुल जनसंख्या का लगभग **8.6%** है।

### जनजातियों के क्षेत्र में बाहरी प्रवेश के प्रभाव

जमीन पर अतिक्रमण

संस्कृति का नष्ट होना

पहचान का संकट

बोलियों का संकट

सामाजिक संरचना का पतन

जनजाति समुदाय का पतन

### **जनजातीय क्षेत्रों में बाहरी प्रवेश का प्रभाव**

जनजातीय क्षेत्रों में बाहरी लोगों का प्रवेश (Encroachment/Intrusion) केवल भौगोलिक बदलाव नहीं लाता, बल्कि यह जनजातीय जीवन के हर पहलू—आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई—को गहराई से प्रभावित करता है। निम्नलिखित बिंदुओं में इसके प्रमुख प्रभावों का विश्लेषण किया गया है:

#### **1. जमीन पर अतिक्रमण**

बाहरी लोगों द्वारा भूमि पर कब्जा करने से जनजातियों की पारंपरिक भूमि अधिकार समाप्त होने लगते हैं। खनन, उद्योग और वनों की कटाई के कारण वे विस्थापित होते हैं।

☞ **उदाहरण:** मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में खनन परियोजनाओं के कारण कई जनजातीय समुदायों का विस्थापन हुआ है।

#### **2. संस्कृति का नष्ट होना**

बाहरी प्रभावों से जनजातीय परंपराएँ, रीति-रिवाज, नृत्य, लोककला और धार्मिक मान्यताएँ कमजोर हो जाती हैं। आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक जीवनशैली धीरे-धीरे समाप्त होती है। बाहरी संस्कृति, बाजारवाद और आधुनिक जीवनशैली के दबाव में उनकी परंपराएँ, रीति-रिवाज, लोकनृत्य और धार्मिक आस्थाएँ धीरे-धीरे लुप्त होने लगती हैं।



### 3. पहचान का संकट

जनजातियों की विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान होती है, लेकिन बाहरी समाज के दबाव में वे अपनी पहचान खोने लगते हैं। इससे आत्मसम्मान और सामुदायिक एकता पर असर पड़ता है। परिणामस्वरूप जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट पहचान के संकट से जूझने लगता है, क्योंकि वे मुख्यधारा समाज में समाहित होते हुए अपनी अलग पहचान खोने लगते हैं।

### 4. बोलियों का संकट

जनजातीय भाषाएँ और बोलियाँ (जैसे गोंडी, भीली, संधाली) बाहरी भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी) के प्रभाव में कम उपयोग होने लगती हैं, जिससे वे विलुप्ति के कगार पर पहुंच जाती हैं। इसी क्रम में उनकी बोलियाँ और भाषाएँ भी संकट में पड़ जाती हैं, क्योंकि नई पीढ़ी बाहरी भाषाओं को अपनाने लगती है और पारंपरिक भाषाएँ उपयोग से बाहर हो जाती हैं, जिससे भाषाई विविधता पर खतरा उत्पन्न होता है।

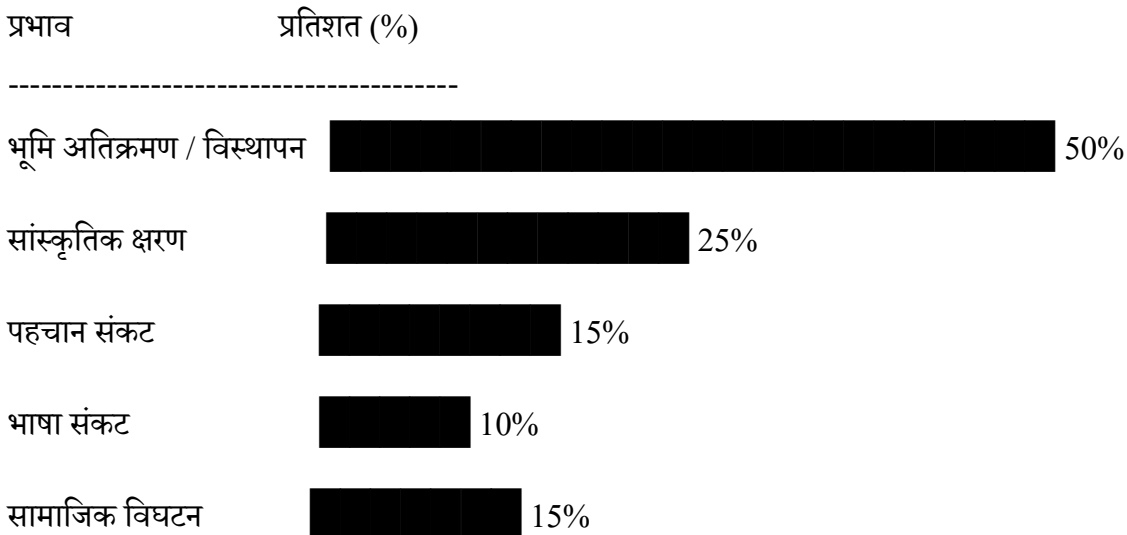
### 5. सामाजिक संरचना का पतन

परंपरागत सामाजिक व्यवस्था—जैसे जनजातीय पंचायत, सामूहिक निर्णय प्रणाली—बाहरी हस्तक्षेप से कमजोर हो जाती है। इससे सामाजिक असंतुलन और संघर्ष बढ़ते हैं। जनजातीय सामाजिक संरचना—जो सामुदायिक जीवन, पारंपरिक नेतृत्व और पारस्परिक सहयोग पर आधारित होती है—भी विघटित होने लगती है।

### 6. जनजातीय समुदाय का नष्ट होना

लगातार अतिक्रमण, विस्थापन और सांस्कृतिक क्षरण के कारण जनजातीय समुदाय का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाता है। कुछ छोटे जनजातीय समूह विलुप्त भी हो रहे हैं।

हम जनजातीय के क्षेत्रों पर इनके वास्तविक ग्राफ से समझ सकते हैं।





गरीबी/समुदाय पतन

30%

### निष्कर्ष

जनजातीय क्षेत्रों में बाहरी प्रवेश का प्रभाव बहुआयामी और गंभीर है। यह केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सांस्कृतिक अस्तित्व और सामाजिक न्याय का मुद्दा है। जनजातीय अधिकारों की रक्षा, भूमि सुरक्षा कानूनों का सख्ती से पालन और स्थानीय संस्कृति के संरक्षण के प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं।

### संदर्भ

1. Verrier Elwin (1964). *The Tribal World of Verrier Elwin*. Oxford University Press.
2. Ministry of Tribal Affairs (2014). *Report on Tribal Development in India*. Government of India.
3. Census of India (2011). *Primary Census Abstract for Scheduled Tribes*. Government of India.
4. Planning Commission of India (2008). *Development Challenges in Extremist Affected Areas*. Government of India.